Vol 4 Issue 2 Aug 2014

ISSN No :2231-5063

International Multidisciplinary Research Journal

Golden Research Thoughts

Chief Editor
Dr.Tukaram Narayan Shinde

Publisher
Mrs.Laxmi Ashok Yakkaldevi

Associate Editor
Dr.Rajani Dalvi

Honorary
Mr.Ashok Yakkaldevi

Welcome to GRT

RNI MAHMUL/2011/38595 **ISSN No.2231-5063**

Golden Research Thoughts Journal is a multidisciplinary research journal, published monthly in English, Hindi & Marathi Language. All research papers submitted to the journal will be double - blind peer reviewed referred by members of the editorial board.Readers will include investigator in universities, research institutes government and industry with research interest in the general subjects.

International Advisory Board

Flávio de São Pedro Filho
Federal University of Rondonia, Brazil

Kamani Perera
Regional Center For Strategic Studies, Sri Lanka

Janaki Sinnasamy
Librarian, University of Malaya

Romona Mihaila
Spiru Haret University, Romania

Delia Serbescu
Spiru Haret University, Bucharest, Romania

Anurag Misra
DBS College, Kanpur

Titus PopPhD, Partium Christian University, Oradea,Romania

Mohammad Hailat
Dept. of Mathematical Sciences, University of South Carolina Aiken

Abdullah Sabbagh
Engineering Studies, Sydney

Ecaterina Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest

Loredana Bosca
Spiru Haret University, Romania

Fabricio Moraes de Almeida
Federal University of Rondonia, Brazil

George - Calin SERITAN
Faculty of Philosophy and Socio-Political Sciences Al. I. Cuza University, Iasi

Hasan Baktir
English Language and Literature Department, Kayseri

Ghayoor Abbas Chotana
Dept of Chemistry, Lahore University of Management Sciences[PK]

Anna Maria Constantinovici
AL. I. Cuza University, Romania

Horia Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest,Romania

Ilie Pintea,
Spiru Haret University, Romania

Xiaohua Yang
PhD, USA

......More

Editorial Board

Pratap Vyamktrao Naikwade
ASP College Devrukh,Ratnagiri,MS India

R. R. Patil
Head Geology Department Solapur University,Solapur

Rama Bhosale
Prin. and Jt. Director Higher Education, Panvel

Salve R. N.
Department of Sociology, Shivaji University,Kolhapur

Govind P. Shinde
Bharati Vidyapeeth School of Distance Education Center, Navi Mumbai

Chakane Sanjay Dnyaneshwar
Arts, Science & Commerce College, Indapur, Pune

Awadhesh Kumar Shirotriya
Secretary,Play India Play,Meerut(U.P.)

Iresh Swami
Ex - VC. Solapur University, Solapur

N.S. Dhaygude
Ex. Prin. Dayanand College, Solapur

Narendra Kadu
Jt. Director Higher Education, Pune

K. M. Bhandarkar
Praful Patel College of Education, Gondia

Sonal Singh
Vikram University, Ujjain

G. P. Patankar
S. D. M. Degree College, Honavar, Karnataka

Maj. S. Bakhtiar Choudhary
Director,Hyderabad AP India.

S.Parvathi Devi
Ph.D.-University of Allahabad

Sonal Singh,
Vikram University, Ujjain

Rajendra Shendge
Director, B.C.U.D. Solapur University, Solapur

R. R. Yalikar
Director Managment Institute, Solapur

Umesh Rajderkar
Head Humanities & Social Science YCMOU,Nashik

S. R. Pandya
Head Education Dept. Mumbai University, Mumbai

Alka Darshan Shrivastava
Shaskiya Snatkottar Mahavidyalaya, Dhar

Rahul Shriram Sudke
Devi Ahilya Vishwavidyalaya, Indore

S.KANNAN
Annamalai University,TN

Satish Kumar Kalhotra
Maulana Azad National Urdu University

Address:-Ashok Yakkaldevi 258/34, Raviwar Peth, Solapur - 413 005 Maharashtra, India
Cell : 9595 359 435, Ph No: 02172372010 Email: ayisrj@yahoo.in Website: www.aygrt.isrj.net

Golden Research Thoughts
ISSN 2231-5063
Impact Factor : 2.2052(UIF)
Volume-4 | Issue-2 | Aug-2014
Available online at www.aygrt.isrj.net

GRT

तबले के लखनऊ घराने के कुछ उस्तादों का संक्षिप्त परिचय

श्रीकान्त शुक्ल

(प्रबन्ध निदेशक), सरस्वती म्यूज़िकल अकादमी, लखनऊ।

सारांश :-उस्ताद मोदू ख़ाँ (अनुमान से जन्म सन् 1800 ई. के बाद)

तबले के विकास में दिल्ली के उस्ताद सिद्धार ख़ाँ 'ढाढ़ी' मील के एक पत्थर के समान हैं। विभिन्न पुस्तकों में इनके तीन पुत्र होने का प्रमाण मिलता है। उनमें से घसीट ख़ाँ और बुगरा ख़ाँ के अतिरिक्त तीसरे का नाम तक इतिहास की गर्त में खो गया है, फिर भी वे अपने तीन यशस्वी पुत्रों– मक्कू ख़ाँ, मोंदू ख़ाँ और बख्शू ख़ाँ के कारण महत्त्वपूर्ण हैं। वे तीनों अपना वतन छोड़कर लखनऊ में बस गये। यहाँ रहकर उन बन्धुओं ने तबले की परम्परा को उत्तर भारत में फैलाया और "लखनऊ घराना" की स्थापना की। मोदू ख़ाँ के जन्म और मृत्यु की तिथियों की जानकारी नहीं है। डॉ. अरूण कुमार सेन ने अपनी पुस्तक में उनको लखनऊ के नवाब अमज़द अली शाह के दरबार में आने की बात लिखी है, जिनका शासनकाल सन् 1842 से सन् 1847 तक माना जाता है। यदि इसे सही मान लेते हैं, तो शोधार्थी का अनुमान है कि वे उस समय 25–30 वर्ष के रहे होगें। इस दृष्टि से उनका जन्म सन् 1800 इ. के बाद कभी हुआ होगा।

प्रस्तावना :-

मोदू ख़ाँ एक अच्छे रचनाकार और सहृदय गुरु थे। उनकी वंश पताका को वाराणसी के पंडित राम सहाय जी ने फहराया। ख़ाँ साहब ने पंडित जी को 12 वर्षों तक अपने घर में रखकर शिक्षा दी। इसी सन्दर्भ में उस्ताद मोंदू ख़ाँ की पत्नी को भी तबले की गूढ़ जानकारी की पुष्टि होती है, जो सम्भवतः पंजाब के किसी तबले के उस्ताद की पुत्री थीं। उल्लेखनीय है कि उनके विषय में अधिक पुष्ट जानकारी उपलब्ध नहीं है। केवल कुछ बुजुर्गों से अलग–अलग बातें सुनने में आती हैं। लखनऊ में चौक स्थित एक हवेली या कोठी, मोंदू ख़ाँ को राज्य की ओर से उपहार स्वरूप मिली थी। यूँ तो यह कोठी अब उनके वंशजों के हाथ से निकल चुकी है। परन्तु फिर भी उनके वंशजों को कोठीवाल घराने का कहने में गर्व का अनुभव होता है। उत्तर भारत में जब तक तबले की परम्परा की चर्चा होती रहेगी, उस्ताद मोंदू ख़ाँ का नाम अमर रहेगा।

उस्ताद बख्शू ख़ाँ–

ख़लीफ़ा मियाँ बख्शू ख़ाँ को भी तबले के लखनऊ घराने के संस्थापक होने का श्रेय प्राप्त है। आपके जन्म और मृत्यु की तिथियाँ तो ज्ञात नहीं, परन्तु अनुमान है, कि जब आप दिल्ली से लखनऊ आये होगें, उस समय लखनऊ की गद्दी पर नवाब आसिफ–उद्दौला (सन् 1775–1797 ई0) विराजमान थे। बख्शू ख़ाँ के दो भाई मक्कू ख़ाँ और मोंदू ख़ाँ भी उसी के आस–पास लखनऊ आये। परन्तु भाईयों में बख्शू ख़ाँ अधिक अभ्यासी, मीठा तबला–वादक और अद्भुत रचनाकार थे। आपके पास पखावज और दिल्ली घराने की वादन शैली का भण्डार तो पहले से ही था और यहाँ आने के बाद अपनी उस कला पर पूर्वी रंग चढ़ाकर लखनऊ को एक घराने के रूप में मान्यता दिलाने का भी सार्थक प्रयास किया।

उस्ताद ने अपनी एक मात्र पुत्री को अपनी कला से परिचित कराया और उसका विवाह फर्रुखाबाद के अपने शागिर्द विलायत अली से कर दिया और दहेज में अनेक बंदिशें भेंट में दीं। बाद में यही विलायत अली, हाजी विलायत अली के नाम से फर्रुखाबाद घराने के संस्थापक के रूप में चमके।

मियाँ बख्शू ख़ाँ की रचनाओं में दायें–बायें के सुन्दर समन्वय का नमूना मिलता है। पं0 मुलगांवकर की पुस्तक "तबला" के पृष्ठ संख्या 296 से साभार उद्धृत रचना प्रस्तुत है, जो तिपल्ली गत के नाम से दी गई है–

दिंऽग	दिंऽग	तकिट	ताकिट	।
×				
धात्रक	धितिट	कताग	दिगन	।
2				
धात्रकधि	किटतक	गद्दींऽ	ऽऽकिट	।
0				
दिंऽगदिंऽग	तकिटतकिट	धात्रकधिकिट	कतागदिगन	।
धा				
3				×

उ बख्शू ख़ाँ के दो पुत्र थे– मम्मू ख़ाँ तथा केसरी ख़ाँ। वे दोनों अपने युग के उत्कृष्ट तबला वादक थे। आपके एक दामाद तथा शिष्य हाजी विलायत अली ख़ाँ थे, जिन्होंने फर्रुखाबाद घराने की स्थापना की।

इस प्रकार बख्शू ख़ाँ लखनऊ घराने के संस्थापक के रूप में जाने जाते हैं। तबला वादकों में उनका नाम अत्यन्त उच्च माना गया है। बख्शू ख़ाँ जी की वंश परम्परा में निम्न कलाकार आते हैं–

1.उस्ताद मम्मू ख़ाँ–

उ मम्मू ख़ाँ अपने चाचा उ0 मोदू ख़ाँ की विद्वत्ता से बहुत प्रभावित थे, अतः अपने पिता बख्शू ख़ाँ के होते हुये भी उनकी अधिकतर शिक्षा अपने चाचा मोदू ख़ाँ से हुई। उस्ताद मम्मू ख़ाँ लखनऊ घराने के ख़लीफ़ा माने गए। तबले में धिरकिट शब्द के निकास को स्याही से सरका करके पूरे पंजे से बजाने का प्रचलन उन्होंने आरम्भ किया था। उ0 मम्मू ख़ाँ के दो पुत्र – मोहम्मद ख़ाँ और नज्जू ख़ाँ थे।

2.उस्ताद मोहम्मद ख़ाँ (मम्मद ख़ाँ)–

मोहम्मद ख़ाँ अपने पिता की भाँति यशस्वी कलाकार थे। मोहम्मद करम इमाम ने मम्मू ख़ाँ के लड़के को मम्मू से भी श्रेष्ठ लिखा है। उ मोहम्मद ख़ाँ नवाब शुजाउद्दौला के दरबारी कलाकार थे। मोहम्मद ख़ाँ ने अपने पिता उ मम्मू ख़ाँ से तबले की तालीम ली और उस ज्ञान–भंडार में अपनी रचनाओं के योग से लखनऊ घराने को और अधिक समृद्ध बना दिया। उ मोहम्मद ख़ाँ की मृत्यु बहुत छोटी उम्र में हो गयी थी। इनके 3 पुत्र थे– मुन्ने ख़ाँ, आबिद हुसैन और नादिर हुसैन। उनके पुत्रों की आयु में काफी अन्तर था। पिता अपने ज्येष्ठ पुत्र को तो अधिक शिक्षा दे पाये परन्तु कनिष्ठ पुत्र आबिद हुसैन को असामयिक मृत्यु हो जाने के कारण बहुत ही कम शिक्षा दे पाये।

उस्ताद मोहम्मद ख़ाँ के जन्म और मृत्यु की तिथियां उपलब्ध नहीं है, परन्तु उनके कनिष्ठ पुत्र आबिद हुसैन का जन्म लखनऊ में सन् 1867 ई0 में हुआ था, अतः मोहम्मद ख़ाँ साहब का जन्म सम्भवतः अधिक से अधिक सन् 1825–30 ई के लगभग हुआ होगा।

3.उस्ताद बड़े मुन्ने ख़ाँ–

आप लखनऊ घराने के एक स्तम्भ माने जाते थे। आपके जन्म और मृत्यु की तिथियों की जानकारी नहीं है। आप ख़लीफ़ा आबिद हुसैन ख़ाँ के अग्रज थे। ख़लीफ़ा का जन्म सन् 1867 ई. में हुआ था। कहते है दोनों भाइयों की उम्र में काफी अन्तर था। अतः अनुमान है कि बड़े मुन्ने ख़ाँ का जन्म सन् 1850–55 इ. के आसपास हुआ होगा। उ. बड़े मुन्ने ख़ाँ साहब मम्मू ख़ाँ के पौत्र व मोहम्मद ख़ाँ के ज्येष्ठ पुत्र थे। पिता की मृत्यु के उपरान्त मुन्ने ख़ाँ ने रचनायें करना प्रारम्भ किया। उनकी रचनाओं में मौलिकता के साथ–साथ लखनऊ और फर्रुखाबाद दोनों घरानों का मिश्रित प्रभाव था।

उ0 बड़े मुन्ने ख़ाँ एक उत्कृष्ट वादक, रचनाकार और सफल गुरु थे। उन्होंने अपने छोटे भाई आबिद हुसैन को पिता की मृत्यु के बाद बारह वर्षों तक तालीम दी। परन्तु उनको अपने छोटे भाई जैसी ख्याति कभी नहीं मिली। उनकी कुछ रचनायें आज भी प्रसिद्ध हैं। उनकी मृत्यु के उपरान्त उस्ताद मुनीर ख़ाँ एवं उनके शिष्यों ने बड़े मुन्ने ख़ाँ की रचनाओं को बजाकर उन्हें अमर रखा। ख़ाँ साहब की कुछ रचनाओं में से एक इस प्रकार है–

गत चतुश्र जाति – तीनताल

धाऽक्रधा | ऽनधाधा | क्रधाऽनधा | घिड़नगदिगनग |

×

तिरकिटतकता | तिरकिटधातिर | धिडनगतिरकिट | तकताऽतिरकिट |

2

धिंऽतराड़नतिऽ | टऽधेंऽतिऽटऽ | धिडनगदिगनग | ताऽतिरकिटतक |

0

धाऽकिटतकधिर | धिरधिरकिटतक | धिरधिरकिटतक | तागेतेटेकताऽन | धा

3 ×

4.उस्ताद नादिर हुसैन ख़ाँ–

मोहम्मद ख़ाँ के दूसरे पुत्र नादिर हुसैन ख़ाँ थे। आप एक उच्चकोटि के तबला–वादक थे। लेकिन आपकी मृत्यु बहुत कम उम्र में हो जाने के कारण आपके विषय में कोई निश्चित जानकारी उपलब्ध ही नहीं हो पायी है। बहुत सी पुस्तकों में तो इनकी चर्चा भी नहीं मिलती है। इनके पुत्र वाजिद हुसैन ख़ाँ एक महान तबला–वादक के रूप में प्रसिद्ध हुए।

5.उस्ताद आबिद हुसैन ख़ाँ –

ख़लीफ़ा आबिद हुसैन ख़ाँ का जन्म सन् 1867 ई. में लखनऊ के महमूद गंज नामक मोहल्ले में हुआ। आपके पिता उ. मोहम्मद ख़ाँ एक ख्याति प्राप्त कलाकार थे और लखनऊ के अन्तिम नवाब वाजिद अली शाह के शासनकाल (सन् 1848–1857 ई0) में दरबार के प्रतिष्ठित कलाकारों में से थे। आबिद हुसैन ख़ाँ की प्रारम्भिक शिक्षा अपने पिता से हुई और बाद में बारह वर्षों तक अपने अग्रज उ0 बड़े मुन्ने ख़ाँ से तबले की शिक्षा प्राप्त की। सतत् अभ्यास के द्वारा आपने अपने वादन में चमत्कार पैदा कर लिया और ख़लीफ़ा के आदर सूचक शब्द से सम्बोधित किए जाने लगे। ख़लीफ़ा जी ने लखनऊ के प्रसिद्ध नृत्यकार ठाकुर प्रसाद जी के घराने के कलाकारों के साथ वर्षों संगत करके–नचकरन में निपुणता प्राप्त कर ली थी। आप नचकरन बाज के ख़लीफ़ा माने गए। आपने बहुत सी रचनायें भी कीं, जो आज भी आपके वंशधरों के पास सुरक्षित हैं। आबिद हुसैन ख़ाँ सन् 1928 ई. से सन् 1936 ई. तक मेरिस म्यूज़िक कालेज, लखनऊ (वर्तमान नाम भातखण्डे संगीत संस्थान, समविश्वविद्यालय, लखनऊ) में सात अध्यापकों की प्रथम टोली में थे, उस समय कालेज के प्रथम उपाचार्य बम्बई के 'डॉ. एस. एन. रातनजनकर' थे।

आपके उल्लेखनीय शिष्यों में आपके भतीजे और दामाद वाजिद हुसैन ख़ाँ, इंदौर के जहाँगीर ख़ाँ, कलकत्ता के पं0 हीरेन्द्र कुमार गांगुली और बनारस के पं. बीरू मिश्र हुये हैं।

इन चमत्कारी तबला वादक ख़लीफ़ा आबिद हुसैन ख़ाँ की मृत्यु लखनऊ में सन् 1936 ई. में हुयी।

6.उस्ताद नज्जू ख़ाँ–

मम्मू ख़ाँ के दूसरे पुत्र नज्जू ख़ाँ जी थे। आप एक उच्चकोटि के तबला वादक थे, लेकिन आपके बारे में कोई विशेष सूचना उपलब्ध नहीं है। आपके निम्न तीन पुत्र उल्लेखनीय हैं–

1.जाकिर हुसैन ख़ाँ
2.छुट्टन ख़ाँ,
3.लाडले ख़ाँ।

7.उस्ताद रजा हुसैन ख़ाँ–

नादिर हुसैन ख़ाँ के ज्येष्ठ पुत्र के रूप में रजा हुसैन ख़ाँ का जन्म हुआ। आपका जन्म लखनऊ में सन् 1900 ई0 के आस–पास हुआ। आप तबले के उच्चकोटि के कलाकार थे, लेकिन आपके बारे में बहुत जानकारी उपलब्ध नहीं हो सकी है। आपके भाई वाजिद हुसैन ख़ाँ एक उच्च कोटि के तबला वादक थे। आपके एक मात्र पुत्र का नाम अकबर हुसैन ख़ाँ था, जो अपने उपनाम बल्लू ख़ाँ के नाम से अधिक प्रसिद्ध थे।

8.उस्ताद वाजिद हुसैन ख़ाँ–

तबला–वादन की कला दिल्ली से सर्वप्रथम लखनऊ में उस्ताद मोदू ख़ाँ और बख्शू ख़ाँ द्वारा आई। उन्हीं के वंशज उ0 मोहम्मद ख़ाँ हुये थे। उन्हीं के पौत्र नादिर हुसैन के पुत्र वाजिद हुसैन ख़ाँ का जन्म लखनऊ में सन् 1906 ई. में हुआ। आपने तबला वादन की शिक्षा अपने चाचा ख़लीफ़ा आबिद हुसैन से आठ वर्ष की आयु से प्राप्त की। बाद में आपका विवाह भी उनकी पुत्री के साथ हो गया। इस प्रकार आप उनके शागिर्द, भतीजे और दामाद थे। आठ घण्टे का नियमित अभ्यास करके आपने तबला पर पूरा अधिकार प्राप्त कर लिया था। शिक्षा के दौरान आप आकाशवाणी लखनऊ से भी सम्बद्ध रहकर लगातार अपना कार्यक्रम प्रसारित करते रहे। लखनऊ घराने के कायदे, परन, गत और रेला आप बड़े अधिकार से बजाया करते थे। जीवन के आठवें दशक में भी जब तबला लेकर बैठते थे, तो आपमें युवकों जैसी स्फूर्ति आ जाती थी।

उस्ताद वाजिद हुसैन ख़ाँ अत्यन्त सरल स्वभाव के और मृदुभाषी व्यक्ति थे। आपसे कोई जानकारी प्राप्त करना टेढ़ी खीर थी। देश के अतिरिक्त आपने काबुल की भी सांगीतिक यात्रा की थी। आपके पुत्र जनाब आफ़ाक़ हुसैन ख़ाँ ने खूब यश अर्जित किया। उस्ताद वाजिद हुसैन ख़ाँ की मृत्यु लखनऊ में 24 मई सन् 1978 ई0 को हुई।

9. उस्ताद अकबर हुसैन ख़ाँ (बल्लू ख़ाँ)–

लखनऊ घराने के यशस्वी तबला–वादक अकबर हुसैन ख़ाँ अपने उपनाम बल्लू ख़ाँ के नाम से अधिक प्रसिद्ध थे। आपका जन्म कानपुर में 3 मार्च सन् 1932 ई. को उ. रज़ा हुसैन के पुत्र के रूप में हुआ। आप बचपन से ही लखनऊ में रहे। आपके नाना नबी ख़ाँ और छुट्टन ख़ाँ एक प्रगाढ़ मित्र थे। अतः उन्होंने अपने नाती को उस्ताद छुट्टन ख़ाँ की छत्रछाया में सौंप दिया। उन्होंने इस होनहार बालक को जी खोल कर सिखलाया। जनाब अकबर हुसैन ख़ाँ लखनऊ के कोठीवाल घराने के प्रतिनिधि कलाकार माने जाते हैं।

उस्ताद अकबर हुसैन ख़ाँ के जीवन का अधिक समय देश के विभिन्न आकाशवाणी के केन्द्रों में स्टाफ कलाकार के रूप में बीता। यह यात्रा आपने कर्सियांग रेडियो से प्रारम्भ की और लखनऊ होते हुये सन् 1984 ई. में बम्बई स्थानान्तरित हो गये और वहीं से 1994 ई. में सेवानिवृत्त हुये, तत्पश्चात् आप पुनः लखनऊ आ गये।

ख़ाँ साहब सोलो और संगति दोनों में सिद्धहस्त थे और नृत्य की संगत में तो विशेष दक्षता रखते थे। बायें हाथ से बजाने वाले ख़ाँ साहब ने देश के अनेक चोटी के कलाकारों के साथ सफल संगति की। आपने हिन्दी फिल्म ''साहब बीबी और गुलाम'' तथा बंगला फिल्म ''ओ आमार देशेर माटी'' में भी वादन किया है। आपने फिल्म जगत के प्रसिद्ध गायक मोहम्मद रफ़ी के दल के साथ सन् 1961 ई. में एक बार अफ्रीका, दो बार पाकिस्तान और एक बार बर्मा की सांगीतिक यात्रायें की। आपको संगीत पीठ, बम्बई ने सन् 1994 ई. में 'ताल विलास' की उपाधि से सम्मानित किया।

ज़नाब अकबर हुसैन ख़ाँ के मुख्य शिष्यों में आपके नाती ताहिर हुसैन, भतीजे समर अब्बास और पटना के श्री गंगा दयाल पाण्डेय हैं। आकाशवाणी से सेवानिवृत्ति के बाद आप धार्मिक यात्रा में हज करने गए वहाँ से लौटते समय आप बीमार पड़ गए और रास्ते में ही आपकी मृत्यु हो गई।

10. उस्ताद जहाँगीर ख़ाँ–

आपका जन्म वाराणसी में सन् 1869 ई. के लगभग हुआ। आपके पिता जनाब अहमद ख़ाँ एक अच्छे कलाकार थे। बालक जहाँगीर को एक सांगीतिक वातावतरण विरासत में मिला। आपने तबले की शिक्षा का प्रारम्भ अपने पिता से किया। प्रतिभा सम्पन्न जहाँगीर ख़ाँ ने तबले की उच्च शिक्षा लखनऊ के ख़लीफ़ा आबिद हुसैन ख़ाँ से प्राप्त की।

मृदुभाषी और छोटे–बड़े कलाकारों की हृदय से प्रशंसा करने वाले उस्ताद ने अपने समय के अनेक श्रेष्ठ कलाकारों के साथ संगति तो की ही, संगीत सम्राट उस्ताद रज्जब अली ख़ाँ साहब के गायन के साथ वर्षों तक संगति करते रहे। आपके तबला–वादन से प्रभावित होकर इन्दौर के महाराज तुकाजीराव होलकर ने लगभग सन् 1911 ई. के आस–पास आपको अपने दरबार के अन्य प्रतिष्ठित कलाकारों के साथ नियुक्त कर लिया। फिर उस्ताद इन्दौर के ही होकर रह गये। आपने अपने जीवन की अन्तिम सांस 11 मई सन् 1976 ई. को इन्दौर में ही ली। उल्लेखनीय है कि देहावसान से 8 वर्ष पूर्व ख़ाँ साहब अपने जीवन की शताब्दी मना चुके थे।

उस्ताद जहाँगीर ख़ाँ सन् 1959 ई. में राष्ट्रपति पुरस्कार से सम्मानित किये गये। संगीत नाटक अकादमी दिल्ली ने आपको फेलोशिप प्रदान की और इन्दिरा कला संगीत विश्वविद्यालय, खैरागढ़ ने अध्याचार्य डॉक्टर ऑफ म्यूज़िक की मानद उपाधि देकर इस कला पुजारी को सम्मानित किया। इसके अतिरिक्त सन् 1955 ई. में अभिनव कला समाज, इन्दौर ने तबला नवाज की उपाधि दी और संगीत समाज, बम्बई ने भी आपको सम्मानित किया। जहाँ जीवन में आपको इतने मान–सम्मान मिले, वहीं धन की देवी लक्ष्मी की कुदृष्टि का कोपभाजन भी होना पड़ा। आपकी सारी जिन्दगी अभावों में बीती। उस्ताद एक अच्छे कलाकार के साथ अच्छे शिष्य और शिक्षक दोनों थे। आपके कई शिष्य आज एक उच्च कलाकार के रूप में अपना नाम कर रहे हैं।

11. पण्डित सपन चौधरी–

संगीत के राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय मंचों पर सक्रिय आधुनिक युग के यशस्वी ताबलिक श्री सपन चौधरी का जन्म सन् 1947 ई. में कोलकाता के

एक संगीत प्रेमी परिवार में हुआ। आपने तबला–वादन की शिक्षा लखनऊ घराने के पं. संतोष कुमार विश्वास से प्राप्त की। आपने अपने सांगीतिक कार्यक्रमों का शुभारम्भ 8 वर्ष की नन्हीं सी उम्र में तानसेन संगीत प्रतियोगिता कोलकाता से किया, जिसमें आपको प्रथम स्थान प्राप्त हुआ। इसके बाद से ऐसे कार्यक्रमों का सिलसिला चल पड़ा। आपने आकाशवाणी द्वारा आयोजित संगीत प्रतियोगिता सहित अनेक प्रतियोगिताओं में प्रथम स्थान प्राप्त किया।

पं. चौधरी स्वतंत्र–वादन और संगति की कला दोनों में दक्ष हैं। आप स्व. उस्ताद अमीर ख़ाँ, उस्ताद अली अकबर ख़ाँ और स्व. निखिल बनर्जी जैसे अपने–अपने क्षेत्र के महान कलाकारों के प्रिय ताबलिक रहे हैं। पं. चौधरी अपनी सांगीतिक सूझ–बूझ के लिये विशेष रूप से विख्यात हैं। विश्व के अनेक देशों की सफल सांगीतिक यात्रा कर चुके, सपन जी वर्तमान में उस्ताद अली अकबर कॉलेज ऑफ म्यूजिक, सेन रेफेल, कैलिफोर्निया (अमेरिका) में डायरेक्टर ऑफ परकशन तथा स्कूल ऑफ म्यूज़िक, स्विटज़रलैण्ड में तबला के पद को सुशोभित कर रहे हैं।
इस प्रकार आप लखनऊ घराने के प्रमुख तबला वादकों में जाने जाते हैं।

संदर्भ सूचि

1.ताल कोश – श्री गिरीश चन्द्र श्रीवास्तव।
2.तबला–पं. मुलगांवकर–पृ. 296।
3.तालकोश, आचार्य गिरीश चन्द्र श्रीवास्तव, पृष्ठ संख्या–240।

Publish Research Article
International Level Multidisciplinary Research Journal
For All Subjects

Dear Sir/Mam,

We invite unpublished Research Paper,Summary of Research Project,Theses,Books and Book Review for publication,you will be pleased to know that our journals are

Associated and Indexed,India

- International Scientific Journal Consortium
- OPEN J-GATE

Associated and Indexed,USA

- EBSCO
- Index Copernicus
- Publication Index
- Academic Journal Database
- Contemporary Research Index
- Academic Paper Databse
- Digital Journals Database
- Current Index to Scholarly Journals
- Elite Scientific Journal Archive
- Directory Of Academic Resources
- Scholar Journal Index
- Recent Science Index
- Scientific Resources Database
- Directory Of Research Journal Indexing

Golden Research Thoughts
258/34 Raviwar Peth Solapur-413005,Maharashtra
Contact-9595359435
E-Mail-ayisrj@yahoo.in/ayisrj2011@gmail.com
Website : www.aygrt.isrj.net